MHRD
Govt. of India

राष्ट्रीय संसाधन केंद्र

हिंदी विषय में उच्च शिक्षा संकाय के लिए

शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (अर्पित) 2019

[Annual Refresher Programme in Teaching (ARPIT) 2019]

रीतिकालीन हिंदी साहित्य

पाठ शीर्षक :	रीतिकाल का नामकरण एवं वर्गीकरण
पाठ लेखक :	प्रो० अवधेश कुमार, प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, दूरभाष : +91-9926394707, ई-मेल : avadesh006@gmail.com
पाठ समीक्षक:	1. प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 2. प्रो. अखिलेश कुमार दुबे, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
समन्वयक	प्रो. अवधेश कुमार, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
सहसमन्वयक	डॉ. रामानुज अस्थाना, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

पाठ का उद्देश्य :

1. रीतिकाल के नामकरण की विवेचना करना।
2. रीतिकाल के वर्गीकरण को प्रस्तुत करते हुए विवेचना करना।
3. रीतिबद्ध एवं रीतिसिद्ध कवियों का परिचय कराना।
4. रीतिमुक्त कवियों के काव्य-सौंदर्य से परिचित होना।

प्रस्तावना :

रीतिकाल के नामकरण एवं वर्गीकरण को लेकर विद्वानों में मतभेद है। अलग-अलग विद्वानों ने प्रवृत्ति विशेष के आधार पर रीतिकाल का नामकरण किया है तथा उसके समर्थन में अपना पक्ष प्रस्तुत किया है। विद्वानों के नाम तथा उनके द्वारा किये गये नामकरण का विवरण निम्नवत है-

क्रम	विद्वानों का नाम	नामकरण
1	डॉ० जार्ज ग्रियर्सन	रीतिकाव्य
2	मिश्रबंधु	अलंकृत काल
3	श्याम सुंदर दास	रीतिग्रंथ काल
4	रामचंद्र शुक्ल	रीतिकाल
5	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	श्रृंगार काल
6	डॉ० राम कुमार वर्मा	कला काल
7	डॉ० गणपति चंद गुप्त	अपकर्ष काल
8	रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	कलाकाल

विषय विस्तार :

'रीति' का अर्थ प्रणाली, पद्धति या शैली होता है। संस्कृत में रीति का अर्थ 'विशिष्ट पद रचना' है परंतु हिंदी में उक्त काल के संदर्भ में इसका प्रयोग शास्त्रीय ग्रंथों अर्थात् लक्षण ग्रंथों के अनुकरण पर काव्य रचना करने के अर्थ में हुआ है! इस प्रकार रीतिकाव्य वह काव्य है जो लक्षण के आधार पर या उसे ध्यान में रखकर लिखा गया है। इसी प्रकार की रचनाओं की अधिकता या प्रभाव के कारण इस काल को रीतिकाल कहा गया। रीतिकाव्य के भीतर प्रायः श्रृंगार के विभिन्न पक्षों को लेकर काव्य रचना हुई, इसी प्रवृत्ति के आधार पर आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने श्रृंगार काल तथा डॉ० नगेन्द्र ने श्रृंगारिकता रीतिकाल की स्नायुओं में बहने वाली रक्तधारा कहा है। रीतिकाव्य के दो रूप हैं-लक्षण युक्त और लक्षण निहित। पहले में लक्षण और उदाहरण दोनों रहते हैं जैसे एक पंक्ति में अलंकार के लक्षण और दूसरी में उसका उदाहरण आदि ऐसे कवियों में चिंतामणि, भिखारीदास, देव पद्माकर आदि। दूसरे में लक्षणों को ध्यान में रखकर उदाहरण स्वरूप रचना की गई। ये लक्षण निहित काव्य अत्यंत काव्यात्मक और मौलिक महत्व के हैं जैसे-बिहारी। बिहारी ने कोई लक्षणग्रंथ नहीं लिखा पर उनके काव्य में यदि लक्षणों के रूप या तत्व ढूढ़े जायें तो अवश्य मिल जायेंगे। रीतिकाव्य की एक तीसरी कोटि भी है-लक्षण निरपेक्ष काव्य या रीतिमुक्त काव्य की। जिनमें भाव पक्ष की प्रबलता है। स्वच्छंद मुक्त भाव से, सरस एवं आत्मीय ढंग से कविता में अनुभूति को निखारा गया है। ऐसे कवियों में घनानंद आलम, बोधा एवं ठाकुर आदि है। पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रीतिकाल के उद्भव पर विचार करते हुए लिखा है- इस समय आर्थिक दृष्टि से समाज में स्पष्ट रूप से दो श्रेणियाँ हो गई हैं-एक तो उत्पादक वर्ग, जिसमें प्रधान रूप से किसान और किसानी से संबंध रखने वाली जातियाँ-बढ़ई, लोहार, कहार, जुलाहा इत्यादि थीं और दूसरा वर्ग भोक्ता (राजा, रईस, नवाब आदि) या भोक्तृत्व का मददगार था।....दोनों का परस्पर संबंध क्रमशः क्षीण होता गया और मुगलकाल के अंतिम दिनों में इन दोनों की दुनिया लगभग अलग हो गई।.... इन दो वर्गों के मध्य कवियों, चित्रकारों, संगीतज्ञों आदि कलावंतों का वर्ग था जो प्रायः उत्पादक वर्ग से उत्पन्न होता था, किंतु भोक्ता वर्ग की स्तुति और मनोरंजन करके जीविका निर्वाह करता था। जिस वर्ग को प्रसन्न करना होता था उसके जीवन और रूचियों का पता होना चाहिए। उत्पादक वर्ग में उत्पन्न ऐसे कलाकारों, कलावंतों को इसका ज्ञान केवल पुस्तकों से सुलभ हो सकता था। इन लोगों ने इसीलिए पुराने समय से प्रचलित तीन श्रेणी के ग्रंथों का सहारा लिया।

1. प्रेम-क्रीड़ाओं को बताने वाले काम-शास्त्र का
2. उक्ति वैचित्र्य से संबंधित अलंकार शास्त्र का और
3. नायक-नायिकाओं के भेदों, स्वभावों को बताने वाले रस-शास्त्र का। हिंदी के रीतिग्रंथ इन तीनों का काम करते हैं।

डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' में लिखा है- ''संस्कृत में काव्यांग निरूपण शास्त्रज्ञ आचार्य करते थे, कवि नहीं। वे काव्यविवेचन के दौरान प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं को उद्धृत करके अपनी बात समझाते थे। रीतिकाल के हिंदी-काव्य पर विचार करने वाले आचार्य नहीं, मूलतः कवि थे। इसलिए उन्होंने नायकों, नायिकाओं, रसों, अलंकारों, छंदों के विवेचन पर कम, इनके दिये गये लक्षणों के उदाहरणों के रूप में रचनाओं पर ज्यादा ध्यान दिया है। इन्होंने अन्य कवियों की रचनाओं के उदाहरण नहीं दिए। उदाहरणों के लिए खुद कविता की। इसीलिए इस काल में आचार्य और कवि दोनों एक ही व्यक्ति होने लगे। यह अवश्य है कि इस प्रणाली पर रीतिकाल में सुंदर रचनाएँ बहुत अधिक मात्रा में लिखी गईं।'' (पृष्ठ-49)

डॉ० त्रिपाठी ने आगे रीतिकाल की विशेषताओं का उद्घाटन करते हुए लिखा है कि ''प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध शुद्ध ऐहिकतापरक श्रृंगार, नीति की मुक्तक रचनाओं की धारा रीतिकाल में प्रभावशाली ढ़ंग से फिर प्रवाहित होती दिखलाई पड़ती है। भक्तिकाल

में भक्ति के आवेग के सामने यह छिप-सी गई थी। गाथा सप्तशती, आर्यासप्तशती अपभ्रंश के मुक्तकों जैसी सरस मनोहारी रचनाएँ रीतिकाल में प्रभूत मात्रा में लिखी गईं। इन रचनाओं में सामान्य जन-जीवन और परिवार में व्याप्त प्रेम, उल्लास, मिलन, विरह की हृदय-हारिणी अभिव्यक्ति हुई। शुद्ध ऐहिकतापरक सरस मुक्तकों की रचना की दृष्टि से रीतिकाल बेजोड़ है।''

भक्ति की कविताओं की परंपरा समाप्त नहीं हुई, किंतु कबीर, सूर, जायसी, तुलसी, मीरा जैसे लोक-संग्रही मानवीय करुणा वाले उत्कृष्ट भक्त कवियों के सामने इस काल के भक्त कवि कहाँ ठहरते हैं। भक्ति इस काल की क्षीयमाण काव्यधारा है। वह भी अपने को काव्यरीति में ढाल रही है। यही कारण है कि इस काल के प्रारंभ में ही ऐसे अनेक कवि दिखलाई पड़ते हैं। जिनका विषय तो भक्ति है किंतु लगते रीतिकाल के कवि हैं। ऐसे कवि वस्तुतः रीतिधारा के ही कवि माने जाने चाहिए जैसे केशव, गंग, सेनापति, पद्‌माकर आदि। इनकी भक्ति भी ठहरी हुई और एकरस है।

इस काल में रीति से हटकर स्वच्छंद प्रेम काव्य भी रचा गया जिसमें काव्य कौशल होते हुए भी प्रेम विशेषतः विरह की तीव्र व्यंजना है। ऐसे कवियों की रचनाओं पर सूफी कवियों के 'प्रेम की पीर' का प्रभाव स्पष्ट है। घनानंद इसी श्रेणी के कवि हैं। स्वच्छंद प्रेम-मार्ग पर चलकर रचना करने वाले अन्य कवि आलम, बोधा, ठाकुर हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुए रीतिकालीन काव्य को दो धाराओं में बाँटा जाता है-रीतिबद्ध काव्यधारा और रीतिमुक्त काव्यधारा।'' (पृष्ठ-50)

हिंदी के प्रचार की दृष्टि से भी रीतिकाव्य का मूल्यांकन करते हुए डॉ० भगीरथ मिश्र ने हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास में लिखा है कि-''रीतियुग सन् 1650 से 1850 ई० तक माना जाता है। यह समय मोटे तौर से मुगल शाहजहाँ के शासन की समाप्ति से लेकर मुगल सम्राट बहादुरशाह के समय तक का है। इसका अंत आते-आते अंग्रेजों का शासन प्रारंभ हो जाता है। इस बीच मुगल बादशाहों के कला और साहित्य प्रेम के कारण दरबारों में कवियों और कलाकारों का विशेष सम्मान बढ़ा। काव्य चर्चा के लिए छोटे-छोटे रजवाड़े भी केंद्र बन गये। दिल्ली के अतिरिक्त राजस्थान के जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, भरतपुर, बूंदी, बुंदेलखण्ड के ओरछा, दतिया, चरखारी बघेलखण्ड के रीवाँ तथा पंजाब के नाभा, कर्पूरथला आदि स्थान कवियों के आश्रय बन गये थे। ये कवि अलंकार शास्त्र के ज्ञान के आधार पर चमत्कारी रचना करते थे। इस प्रवृत्ति का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि दक्षिण में मराठा और मुस्लिम शासकों ने भी हिंदी कवियों को आश्रय दिया।'' (पृष्ठ-62)

पूर्वोक्त काव्यधाराओं के अतिरिक्त इस युग में उत्तम कोटि का वीर काव्य भी लिखा गया। इस श्रेणी के कवियों में भूषण सर्वश्रेष्ठ हैं। ये टिकमापुर (जिला कानपुर) के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1613 ई० में और मृत्यु सन् 1715 ई० में मानी जाती है। इन्होंने अपने समय के दो प्रसिद्ध वीरों महाराज शिवाजी और महाराज छत्रसाल की प्रशंसा में ओजपूर्ण रचनाएँ कीं। इनके तीन ग्रंथ विशेष प्रसिद्ध हैं- 'शिवराजभूषण', 'शिवाबावनी' और 'छत्रसाल'। उदात्त शैली में ओजपूर्ण भावना और ऊँची कल्पना करने वाले कवियों में भूषण का उत्कृष्ट स्थान है। इनकी कविता हृदय में वीरता का संचार करने वाली है। भूषण के अतिरिक्त 'राज विलास' की रचना करने वाले मान कवि तथा 'छत्र-प्रकाश' की रचना करने वाले लाल-कवि भी इस युग के वीर रस के कवियों की परंपरा में हैं। इसी प्रकार श्रीधर, सूदन, हरिकेश, जोधराज और चंद्रशेखर वाजपेयी इस युग की वीर काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवियों में माने जाते हैं।

रीतियुग में नीति काव्य भी पर्याप्त मात्रा में लिखा गया। यह नीति काव्य प्रायः दोहा, छप्पय और कुंडलियां छंदों में हैं। परंतु कवित्त, सवैयों में भी नीति काव्य प्राप्त होता है। इस युग की नीति काव्य रचयिताओं में छत्तीसगढ़ के गोपाल चंद्र मिश्र, रायबरेली के बेनी कवि, मेढ़ता (राजस्थान) के वृंद कवि, चरखारी के बैताल कवि, कन्नौज के घाघ कवि, पूर्वी उत्तर प्रदेश के गिरधर कविराय और काशी के दीनदयाल गिरी अधिक प्रसिद्ध हैं। बेनी कवि के व्यंग्य, वृंद की नीति सतसई, गिरधर की

कुंडलियां और दीनदयाल गिरी की अन्योक्तियाँ लोक नीति का बड़ा गहरा स्वरूप व्यक्त करती हैं। इस प्रकार नीतिकाव्य भी इस युग में महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त कर सका है। (पृष्ठ-64)

हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल का मूल्यांकन, काव्य विकास, भाव, भाष एवं छंद की विवेचना करते हुए विस्तार पूर्वक लिखा है कि- हिंदी काव्य अब पूर्ण प्रौढ़ता को पहुँच गया था। संवत 1598 में कृ पाराम थोड़ा बहुत रसनिरूपण भी कर चुके थे। उसी समय के लगभग चरखारी के मोहनलाल मिश्र ने 'श्रृंगारसागर' नामक एक ग्रंथ श्रृंगार संबंधी लिखा। नरहरि कवि के साथी करनेस कवि ने 'कर्णाभरण', 'श्रुतिभूषण' और 'भूपभूषण' नामक तीन ग्रंथ अलंकार संबंधी लिखे। रसनिरूपण और अलंकारनिरूपण का इस प्रकार सूत्रपात हो जाने पर केशवदास जी ने काव्य के सब अंगों का निरूपण शास्त्रीय पद्धति पर किया। इसमें संदेह नहीं कि काव्यरीति का सम्यक् समावेश पहले पहल आचार्य केशव ने ही किया। पर हिंदी में रीतिग्रंथों की अविरल और अखंडित परंपरा का प्रवाह केशव की 'कविप्रिया' के प्रायः पचास वर्ष पीछे चला और वह भी एक भिन्न आदर्श को लेकर, केशव के आदर्श को लेकर नहीं। (पृष्ठ-161)

आचार्य शुक्ल ने आगे लिखा है कि इन रीतिग्रंथों के कर्ता भावुक, सहृदय और निपुण कवि थे। उनका उद्देश्य कविता करना था, न कि काव्यांगों का शास्त्रीय पद्धति पर निरूपण करना। अतः उनके द्वारा बड़ा भारी कार्य यह हुआ कि रसों (विशेषतः श्रृंगाररस) और अलंकारों के बहुत ही सरस और हृदयग्राही उदाहरण अत्यंत प्रचुर परिमाण में प्रस्तुत हुए। ऐसे सरस और मनोहर उदाहरण संस्कृत के सारे लक्षणों से चुनकर इकट्ठा करें तो भी उनकी इतनी अधिक संख्या न होगी। अलंकार की अपेक्षा नायिका भेद की ओर कुछ अधिक झुकाव रहा। इससे श्रृंगार रस के अंतर्गत बहुत सुंदर मुक्तक रचना हिंदी में हुई। इस रस का इतना अधिक विस्तार हिंदी साहित्य में हुआ कि इसके एक-एक अंग को लेकर स्वतंत्र ग्रंथ रचे गये। इस रस का सारा वैभव कवियों ने नायिकाभेद के भीतर दिखाया। रसग्रंथ वास्तव में नायिकाभेद के ही ग्रंथ हैं जिनमें और दूसरे रस पीछे से संक्षेप में चलते कर दिये गये हैं। नायिक श्रृंगार रस का आलंबन है। इस आलंबन के अंगों का वर्णन एक स्वतंत्र विषय हो गया है और न जाने कितने ग्रंथ केवल नखशिख वर्णन के लिखे गये। इसी प्रकार उद्दीपन के रूप में षट्ऋतु वर्णन पर भी कई पुस्तकें लिखी गई। विप्रलंभ संबंधी बारहमासे भी कुछ कवियों ने लिखे। (पृ. 164)

आचार्य शुक्ल ने छंद पर विचार करते हुए एवं निष्कर्ष देते हुए लिखा है कि- "यहाँ पर यह उल्लेख कर देना भी आवश्यक जान पड़ता है कि रीतिकाल के कवियों के प्रिय छंद, कवित्त और सवैए ही रहे। कवित्त तो श्रृंगार और वीर दोनों रसों के लिए समान रूप से उपयुक्त माना गया था। वास्तव में पढ़ने के ढ़ंग में थोड़ा विभेद कर देने से उसमें दोनों के अनुकूल नादसौंदर्य पाया जाता है। सवैया, श्रृंगार और करुणा इन दो कोमल रसों के लिए बहुत उपयुक्त होता है, यद्यपि वीररस की कविता में भी इसका व्यवहार कवियों ने जहाँ तहाँ किया है। वास्तव में श्रृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई है। प्रधानता श्रृंगार की ही रही। इससे इस काल को रस के विचार से कोई श्रृंगारकाल कहे तो कह सकता है। श्रृंगार के वर्णन को बहुतेरे कवियों ने अश्लीलता की सीमा तक पहुँचा दिया था। इसका कारण जनता की रूचि नहीं , आश्रयदाता राजा महाराजाओं की रूचि थी जिनके लिए कर्मण्यता और वीरता का जीवन बहुत कम रह गया था।"

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि रीतिकालीन हिंदी कविता की शुरुआत केशवदास की 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' से होती है बाद में चिंतामणि से लक्षण ग्रंथों की अखण्ड परंपरा चली, उसके बाद तो लक्षण ग्रंथों की भरमार सी होने लगी। इस बीच कविता लिखने की एक विशिष्ट परिपाटी बन गई। इस समय के आचार्य कवि संस्कृत साहित्य शास्त्र की जिस उत्तरकालीन परंपरा के अनुयायी थे उनमें भी बहुत सूक्ष्म विश्लेषण अनुपस्थित था। दूसरे वे जिनके लिए लिख रहे थे वे बौद्धिक न होकर विलासी अथवा रसिक थे। चिंतन का धरातल यहाँ इसलिए भी बहुत विकसित नहीं

था कि गद्य की विवेचन शैली इन आचार्य कवियों के पास नहीं थी, इनका शास्त्र ज्ञान अपरिपक्व था। इनकी पहुँच 'चंद्रलोक', 'कुवलयानंद', 'रसतरंगिणी', 'रसमंजरी' अधिक से अधिक 'काव्य प्रकाश' और 'साहित्य दर्पण' तक थी। 'ध्वन्यालोकलोचन', 'वक्रोक्तिजीवितम्', 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति' जैसे ग्रंथों तक प्रायः यह नहीं गए। कुलपति मिश्र जैसे एकाध आचार्य कवि ने काव्यांगों के अंतर्संबंध का प्रश्न चाहे उठाया हो, अधिकतर आचार्य कवि, काव्य लक्षणों की सामान्य चर्चा तक ही सीमित थे। हिंदी के रीतिग्रंथों में प्रायः तीन प्रकार की निरूपण शैली दिखाई पड़ती है।

1. 'काव्य प्रकाश' की निरूपण शैली जिसमें सभी काव्यांगों पर विचार किया गया, जैसे सेनापति का 'काव्य कल्पद्रुम', चिंतामणि का 'कविकुलकल्पतरू', 'काव्यविवेक', कुलपति मिश्र का 'रस रहस्य'।
2. 'श्रृंगार तिलक', 'रसमंजरी' आदि की श्रृंगार रसमयी नायिका भेद वाली शैली जिसमें श्रृंगार अंगों का विवेचन तथा नायिका भेद निरूपण व्याख्यान है। जैसे केशवदास की 'रसिकप्रिया', मतिराम का 'रसराज', देव का 'भावविलास', 'रसविलास', भिखारीदास का 'रसनिर्णय'।
3. तीसरी शैली जयदेव के 'चंद्रलोक' और अप्पय दीक्षित के 'कुवलयानंद' के अनुकरण पर चलने वाली निरूपण शैली-जैसे करनेस का 'श्रुतिभूषण', महाराज जसवंत सिंह का 'भाषा भूषण', सूरति मिश्र का 'अलंकारमाला' आदि। इसी काल में वीर रस के ओजस्वी कवि भूषण भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाते हैं। लाल, सूदन, पद्माकर आदि कवियों ने भी वीर रस की कविता का सृजन किया है। इसी युग में नीति काव्य भी यथेष्ठ मात्रा में लिखा गया। वृंद, बैताल, गिरिधर कविराय, बेनी, दीनदयाल गिरि आदि ने लोकनीति का गहरा रूप प्रस्तुत किया।

इस दौर में कुछ ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने रीतिबद्ध परिपाटी से कुछ अलग हटकर अपनी सहज भावानुभूति को वाणी दी। घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर आदि इस प्रवृत्ति के मुख्य कवि हैं। इनके प्रेम वर्णन में अपेक्षाकृत एक निष्ठता है और चातुरी के स्थान पर हृदय की सहजता, सरलता पर बल है। सौंदर्य के चित्रण में स्थूल रूपलिप्सा के स्थान पर भाव संवलित आंतरिकता की झलक मिलती है। काव्य कला के क्षेत्र में भी नये ढ़ंग की लाक्षणिक वक्रता दिखाई देती है। अर्थमयीवक्रता घनानंद की कविता का केंद्रीय आकर्षण है।

लोग हैं लागि कवित्त बनावत।

मोहिं तो मेरो कवित्त बनावत।।

भाषा की दृष्टि से इस काल में ब्रजभाषा ही प्रमुख साहित्यिक भाषा रही। रीतिबद्ध कवियों में ब्रजभाषा का सुंदर रूप देव में है। बिहारी आदि अन्य रीतिबद्ध कवियों की ब्रजभाषा पर प्रादेशिक भाषाओं की छाप है। बिहारी की भाषा में राजस्थानी, बुंदेलखण्डी, अवधी इत्यादि के प्रयोग मिलते हैं। पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है ''घनानंद और ठाकुर ने ब्रजभाषा को बहुत शक्ति दी है। ब्रजभाषा का इन कवियों ने परिमार्जन करके तत्सम शब्दों का प्रयोग करके उसे सुसंस्कृत एवं शक्तिशाली बनाया और दो सौ वर्षों तक वह हिंदी साहित्य-क्षेत्र में एकछत्र राज्य करती रही।''

रीतिकाल का वर्गीकरण :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल का समय संवत 1700 से 1900 निर्धारित करते हुए उसे दो वर्गों में विभक्त किया है-

1. **रीतिग्रंथकार कवि :**

2- **रीतिकाल के अन्य कवि।** रीतिग्रंथकार कवियों में कुल 57 कवियों की गणना कराते हुए उन्होंने 'बिहारी' को रीतिग्रंथकार कवियों की सूची में रखा है जिसे आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने

रीतिसिद्ध कवि कहा है, इन कवियों में मुख्यतः चिंतामणि, महाराज जसवंत सिंह, बिहारी लाल, मतिराम, भूषण, कुलपति मिश्र, देव, श्रीपति, भिखारीदास, अलीमुहिब खाँ, रसलीन, दूलह, बेनी बंदीजन, बेनी प्रवीन, पद्माकर भट्ट, ग्वाल, प्रताप साहि एवं रसिक गोविंद आदि हैं। कुल 46 नामों का उल्लेख है जिनमें रीतिकाल के अन्य कवि इन कवियों में मुख्यतः वृंद, बैताल, आलम, लाल कवि, घनानंद, महाराज विश्वनाथ सिंह, गिरिधर कविराय, बोधा, ठाकुर, चंद्रशेखर, बाबा दीन दयाल गिरि, गिरिधरदास एंव द्विजदेव आदि हैं।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ‘ हिंदी साहित्य का अतीत में रीतिकाल का विभाजन इस प्रकार किया है।

रीतिकाल या श्रृंगारकाल के दो भेद

1. रीतिबद्ध धारा
2. रीतिमुक्त या स्वच्छंद काव्यधारा

1. रीतिबद्ध धारा के अंतर्गत लक्षणबद्ध काव्य एवं लक्षणमात्र काव्य।
2. रीतिमुक्त या स्वच्छंद काव्यधारा के अंतर्गत रहस्योन्मुख काव्य तथा शुद्ध प्रेम काव्य।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने श्रृंगारकाल को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया है-

1. **रीतिबद्ध :** रचना लक्षणों एवं उदाहरणों से परिपूर्ण होती है।
2. **रीतिसिद्ध :** रीति से युक्त परंतु स्वतंत्र काव्य रचनाएँ।
3. **रीतिमुक्त :** रीति परंपरा की साहित्यिक रूढ़ियों (लक्षण आदि) से मुक्त रचनाएँ।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिबद्ध के अंतर्गत-केशवदास, सेनापति, जसवंत सिंह, मतिराम, देव, भिखारीदास, पद्माकर एवं ग्वाल कवि को लिया है।

रीतिसिद्ध के अंतर्गत बिहारी लाल को लिया है।

रीतिमुक्त के अंतर्गत रसखानि, शेख आलम, घनानंद, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव को लिया है।

इसके अतिरिक्त हास्य काव्य, प्रशस्ति काव्य, नीति की सूक्तियाँ, नाट्यकला, अनुवाद काव्य एवं गद्य की भी गणना कराई है।

प्रशस्ति काव्य के अंतर्गत जोधराज, भूषण, लाल, सूदन, चंद्रशेखर वाजपेयी, नीति की सूक्तियों के अंतर्गत रहीम, जमाल, वृंद, बैताल, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि की गणना कराई गई। नाट्यकला के अंतर्गत विश्वनाथ सिंह, रघुराज सिंह, गिरिधरदास की गणना की गयी है।

डॉ० नगेंद्र ने रीतिकाल के कवियों का विभाजन तीन प्रकार से किया है-

1. रीति कवि
2. रीतिमुक्त कवि
3. रीतिसिद्ध कवि

रीति कवियों के भीतर मुख्यतः दो भेद किये गये हैं-

1. सर्वांग निरूपक कवि
2. विशिष्टांग निरूपक कवि

सर्वांग निरूपक के अंतर्गत-चिंतामणि, कुलपति मिश्र, कुमारमणि, सोमनाथ, भिखारीदास, रसिक गोविंद, देव, अमीरदास, ग्वाल तथा प्रताप साहि आते हैं।

विशिष्टांग निरूपक के चार भेद किये गये हैं–

1. सर्वरस निरूपक
2. श्रृंगाररस निरूपक
3. छंदो निरूपक
4. अलंकार निरूपक

1. **सर्वरस निरूपक :** इसके अंतर्गत तोष, सुखदेव मिश्र, रसलीन, पद्‌माकर, राम सिंह, उजियारे, चंद्रशेखर वाजपेयी, याकूब खाँ एवं बेनी प्रवीन आते हैं।
2. **श्रृंगार रस निरूपक :** इसके अंतर्गत मतिराम एवं कृष्णभट्ट देवऋषि आते हैं।
3. **छंदो निरूपक :** इसके अंतर्गत भूषण, मतिराम, सुखदेव मिश्र, माखन, दशरथ एवं राम सहाय आते हैं।
4. **अलंकार निरूपक :** इसके अंतर्गत भूषण, मतिराम, जसवंत सिंह, गोप, रसिक सुमति, रघुनाथ बंदीजन, दूलह, रसरूप, पद्‌माकर, सेवादास एवं गिरिधरदास आते हैं।

रीतिमुक्त कवि : इसके अंतर्गत शेख आलम, घनानंद, बोधा, ठाकुर एवं द्विजदेव आते हैं।

रीतिसिद्ध कवि : इसके अंतर्गत-सेनापति, बिहारी लाल, रसनिधि, वृंद, नृपशंभु, नेवाज, कृष्ण कवि, हठीजी, विक्रमादित्य, राम सहाय, पजनेस एवं बेनी वाजपेयी आते हैं।

डॉ० बच्चन सिंह ने भिन्न प्रकार से रीतिकाल का विभाजन किया है, उन्होंने रीतिकाल को मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त किया है। 1- बद्धरीति कवि 2- मुक्तरीति कवि 3- रीतिइतर काव्य।

1. बद्धरीति कवि : इन कवियों के दो भेद किये गये हैं।

1- रीतिचेतस कवि 2- काव्यचेतस कवि

रीतिचेतस कवि के अंतर्गत चिंतामणि, जसवंत सिंह, भिखारीदास, प्रताप साहि, ग्वाल आते हैं।

काव्यचेतस कवि इसके अंतर्गत मतिराम, भूषण, देव, पद्‌माकर आते हैं।

2. मुक्तरीति कवि : इसके अंतर्गत दो धारा के कवि आते हैं।

- अभिजात्य वर्ग-इसके अंतर्गत बिहारी लाल आते हैं।
- स्वच्छंद काव्य धारा-इसके अंतर्गत आलम, घनानंद, ठाकुर, बोधा एवं द्विजदेव आते हैं।

इसके अतिरिक्त रीतिइतर काव्य के अंतर्गत अन्य सभी आते हैं। पर अंततः आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का ही रीतिकाल का विभाजन प्रायः सर्वमान्य है। जिसे हम तीन वर्गों में विभक्त करते हैं-1-रीतिबद्ध 2- रीतिसिद्ध 3- रीतिमुक्त

रीतिबद्ध काव्य : रीतिकाव्य को परिभाषित करते हुए 'हिंदी साहित्य कोश-भाग 1' में लिखा है कि 'रीति शब्द का हिंदी साहित्य में विशेष अर्थ में प्रयोग हुआ है। लक्षण देते हुए या लक्षण को ध्यान में रखकर लिखे गये काव्य से होता है। इस प्रकार रीतिकाव्य वह काव्य है जो लक्षण के आधार पर या उसको ध्यान में रखकर रचा जाता है। अलंकार, रस, ध्वनि आदि को लेकर इसके उदाहरण के रूप में रचित काव्य इस साहित्य के अंतर्गत आते हैं। शास्त्रीय परंपरा में चिंतामणि ने 'कविकुलकल्पतरू' में रीति को काव्य का स्वभाव माना है। कुलपति ने रीति की पर्यायवृत्तियों पर 'रसरहस्य' में विचार किया है। देव ने अपने 'काव्य रसायन' में रीति को काव्य का द्वार माना है, जिसका भाव माध्यम से है। भिखारीदास ने 'काव्यनिर्माण' में मम्मट के आधार पर रीतियों के स्थान

पर केवल वृत्तियों का वर्णन किया है। आधुनिक विवेचकों में कन्हैयालाल पोद्दार, अर्जुनदास केडिया तथा रामदहिन मिश्र हैं, जिनका आधार संस्कृत रीति शास्त्र है। नवीन दृष्टि के आलोचकों ने इसे वर्णन की शैली के रूप में स्वीकार किया है। (पृष्ठ-561)

रीतिसिद्ध कवि : डॉ० रामदेव शुक्ल ने लिखा है कि रामचंद्र शुक्ल 'रीतिग्रंथकार कवि' के रूप में जिन 57 कवियों की गणना करते हैं, उनमें चौथे नंबर पर वह बिहारी को रखते हैं। उनकी दृष्टि में बिहारी की कविता 'मुक्तक काव्य के गुणों के चरम उत्कर्ष पर पहुँची हुई है', 'इनके दोहे क्या हैं, रस के छोटे-छोटे छींटे हैं। इनमें तो रस के ऐसे छींटे पड़ते हैं, जिनसे हृदय कलिका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है।' कल्पना की समाहार शक्ति बिहारी के दोहों में पूर्ण रूप में है। इनके अनुभव-विधान में रसव्यंजना का पूर्ण वैभव देखकर शुक्ल जी कहते हैं, 'अनुभावों और हावों की ऐसी सुंदर योजना कोई श्रृंगारी कवि नहीं कर सकता है।' बिहारी की ऐसी ही विशेषताओं से अभिभूत होकर आचार्य शुक्ल ने उन्हें 'रीतिग्रंथकार कवि' वर्ग में रखा है। अर्थात् रीतिसिद्ध कवि वे हैं, जो लक्षणग्रंथ तो नहीं लिखते परंतु लक्षण के सारे तत्वों को उनकी कविता में देखा जाय तो वे सहज ही विद्यमान हैं। बिहारी इस अर्थ में रीतिसिद्ध कवि हैं।

रीतिमुक्त कवि : डॉ० रामदेव शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य ज्ञान कोश-भाग 6' में लिखा है कि "काव्य साधना में रीति और भावपक्ष दोनों का महत्व है। रीतिमुक्त कवियों ने रीति से अधिक स्वच्छंद भाव को महत्व दिया। काव्य लक्षण के उदाहरण के रूप में कवि-कर्म करने के बंधन से जो कवि मुक्त हो गए, उन्हें ही 'रीतिमुक्त' कहा जाता है।" (पृष्ठ-3211)। 'रीतिकाल के अन्य कवि' शीर्षक अध्याय में रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं, 'रसखान, घनानंद, आलम, ठाकुर आदि जितने प्रेमोन्मत्त कवि हुए हैं, उनमें किसी ने लक्षणबद्ध रचना नहीं की।' 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' में बच्चन सिंह रीतिमुक्त कवियों के लिए 'स्वच्छंद काव्यधारा' वर्ग बनाकर लिखते हैं, जिस प्रकार साम्राज्य का ढाँचा टूट रहा था, उसी प्रकार रीति से बंधा हुआ कविता का ढांचा भी टूटने लगा था।'

रीतिमुक्त धारा के कवियों ने साधन की तुलना में साध्य पर अधिक ध्यान दिया। वे बुद्धि द्वारा संचालित कवि न होकर प्रगाढ़ भावना के कवि थे। इस धारा के काव्य में बुद्धि भावना की दासी है, 'रीझि सुजान सची पटरानी, बची बुधि बावरी ह्वैकरि दासी।'

कवित्त करना खेल नहीं है, शब्द-क्रीड़ा नहीं है। इस संबंध में ठाकुर का एक प्रसिद्ध छंद है, 'लोगन कवित्त कीवो खेल करि जानो है।'

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में रीतिकाल की विशेषताओं का उद्घाटन करते हुए लिखा है कि- "रीतिकालीन काव्य की विशिष्टता इस बात में है कि उसकी मूल प्रेरणा ऐहिक है। भक्ति-काल की ईश्वर-केंद्रिक दृष्टि के सामने इस मनुष्य-केंद्रिक दृष्टि का अंतर साफ समझ में आता है, और तब उस दृष्टि की मौलिकता और साहसिकता भी समझ में आती है। आदिकालीन कवि ने अपने चरित-नायक को ईश्वर सदृश महिमावान अंकित किया था। भक्ति-काल में ईश्वर की नर-लीला का चित्रण है। रीतिकाल में कवि ईश्वर और मनुष्य दोनों का मनुष्य रूप में चित्रण करता है। यहाँ भक्तिकाल और रीतिकाल की प्राथमिकताओं के बीच अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। भक्त तुलसीदास लिखते हैं-

कबि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ।।

पर आचार्य भिखारीदास का कहना है-

आगे के सुकबि रीझिहैं तौ कविताई न तौ,

राधिका-कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

एक के लिए ईश्वर-भक्ति प्रधान है और राम का गुण-गान प्रमुख उद्देश्य है, इस प्रक्रिया में कविता भी बन जाए तो अच्छा है। दूसरे के लिए कविता रचना प्रमुख है, यदि कविता न बन सके तो लाचारी में उसे राधा-कृष्ण का स्मरण मान लिया जाए। स्पष्ट ही रीतिकालीन कवि का आत्म-विश्वास अपने कवि-कर्म में स्पृहणीय है, परिणाम पर तो किसी रचनाकार का वश नहीं हो सकता।

ऐसी स्थिति में रीतिकालीन कवि-कर्म भक्ति काल की तुलना में सजग हो जाता है। रीतिकालीन काव्य, विशेषतः रीतिबद्ध काव्य में भाषा के प्रति दृष्टिकोण बदलता है। दरबारी वातावरण के समानांतर भाषा अब कृत्रिम और अलंकरण प्रधान हो जाती है, या कहना चाहिए छंद-अलंकार प्रधान हो जाते हैं, भाषा गौण हो जाती है। (पृष्ठ-67)

रीतिकाव्य के विकास में कई कला धाराओं का विकास देखते हुए डॉ० राम स्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि-हिंदी रीतिकाव्य के विकास में कई चिंतन और कला-धाराओं का योगदान देख जा सकता है। संस्कृत का काव्यशास्त्र, प्राकृत-अपभ्रंश की श्रृंगारी और मुक्तक-परंपरा, मध्यकालीन हिंदी कृष्ण-भक्ति काव्य और उत्तर भारत के मंदिरों तथा दरबारों में विकसित शास्त्रीय संगीत-इन सबका रचनात्मक संपर्क रीतिकाव्य में हुआ। तब यह स्वाभाविक था कि इन कवियों के लिए मौलिकता का एक ही क्षेत्र सूक्ष्म परिकल्पना का रह जाए। आश्रयदाता की प्रशंसा तथा श्रृंगार-वर्णन के समय बहुत बार यह परिकल्पना अतिरंजना के आवेश में ऊहा का रूप धारण कर लेती है। ऐसे पद्यों का अब दस्तावेजी महत्व है। पर बहुत जगहों पर यह परिकल्पना आत्मीय अनुभूति में डूब कर अनुपम काव्य-लय की सृष्टि करती है जो रीतिकाव्य की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। पंडितों के अलावा ऐसे छंद ग्रामीण अंचलों तक के मध्य-वित्त परिवारों में लोगों को कंठस्थ रहे हैं, 'हजारा' जैसे संकलन इसके कारण और प्रमाण हैं।

निष्कर्ष : संक्षेप में संपूर्ण व्याख्यान/चर्चा के निष्कर्ष इस प्रकार हैं-

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रीतिकाल का समय संवत 1700 से 1900 तक माना जाता है।
2. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त किया है-रीतिबद्ध काव्य, रीतिसिद्ध काव्य एवं रीतिमुक्त काव्य। यही विभाजन प्रायः मान्य हैं।
3. भक्ति के अतिरिक्त इस युग में प्रचुर मात्रा में श्रृंगार काव्य, वीर काव्य, नीति काव्य तथा हास्य विनोद काव्य लिखा गया।
4. इस युग की प्रमुख काव्य प्रवृत्ति जीवन के वास्तविक सौंदर्य चित्रण की रही है। अतः इस युग का काव्य आदर्शवादी नहीं वरन यर्थाथवादी कहा जा सकता है।
5. इस युग के काव्य में जीवन के दोनों पक्षों-संघर्ष और आनंद का सफलतापूर्वक चित्रण किया गया है।
6. अलंकारिता तथा रूप सौंदर्य वर्णन में इस काल के कवियों की विशेष रुचि है।
7. शास्त्रीयता तथा श्रृंगारिकता इस युग की विशेष प्रवृत्ति रही है।
8. ब्रजभाषा का जितना सरस चित्रण एवं प्रांजल निखार इस युग के कवियों में पाया जाता है, अत्यंत दुर्लभ है।
9. इस युग के कवियों में मुक्त काव्य रचना की विशेष प्रवृत्ति दिखाई देती है। प्रबंध काव्य की प्रवृत्त्िा बहुत कम है।
10. इस युग के काव्य जहाँ एक ओर दरबारों में विद्वानों के बीच सम्मानित हुए, वहीं दूसरी ओर अपने रस (माधुर्य) के कारण जन सामान्य के बीच भी अत्यधिक लोकप्रिय हुए। यही रीतिकाल की ताकत है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य कोश-भाग 1, संपादक-डॉ० धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रण-जुलाई 2013।
2. हिंदी साहित्य ज्ञान कोश-भाग 6, प्रधान संपादक-डॉ० शुभनाथ, भारतीय भाषा परिषद, 36ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकत्ता-700017, प्रथम संस्करण-2019।
3. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, उन्नीसवाँ पुनर्मुद्रण संवत-2038।
4. हिंदी साहित्य का अतीत-दूसरा भाग-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, 4695, 21ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, द्वितीय संस्करण-2008, आवृत्ति-2014।
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास-डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन, 15ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-जुलाई 1986।
6. हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास-डॉ० भगीरथ मिश्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली, संस्करण-अगस्त 1978।
7. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास-डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986।
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ० बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, तीसरी आवृत्ति 2004।

स्वमूल्यांकन

दीर्घउत्तरीय प्रश्न :

1. रीतिकाल के नामकरण पर विचार कीजिए।
2. विभिन्न आचार्यों द्वारा किये गये (रीतिकाल के) नामकरण की विवेचना कीजिए।
3. रीतिग्रंथकार प्रमुख कवियों की विवेचना कीजिए।
4. रीतिकाल के अन्य कवियों के बारे में लिखिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न :

1. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को कितने वर्गों में विभक्त किया है? संक्षेप में लिखिए।
2. रीतिबद्ध काव्य किसे कहते हैं? उसके प्रमुख कवियों एवं काव्य ग्रंथों के नाम लिखिए।
3. रीतिमुक्त काव्य किसे कहते हैं? उसके प्रमुख कवियों की विवेचना कीजिए।
4. बिहारी के काव्य वैभव पर विचार कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल का समय निर्धारित किया है-
   (क) संवत् 1200-1500 (ख) संवत् 1300-1500
   (ग) संवत् 1700-1900 (घ) संवत् 1600-1900

उत्तर : संवत 1700-1900 तक

2. रीतिकाल को 'कलाकाल' किसने कहा?
(क) मिश्रबंधु (ख) श्यामसुंदर दास
(ग) रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' (घ) त्रिलोचन

उत्तर : **रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'**

3. 'शिवराज भूषण' ग्रंथ के रचयिता हैं-
(क) देव (ख) भूषण
(ग) मतिराम (घ) आलम

उत्तर : **भूषण**

4. 'कविकुलकल्पतरू' किसकी रचना है?
(क) पद्माकर (ख) चिंतामणि
(ग) देव (घ) भिखारीदास

उत्तर : **चिंतामणि**

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. हिंदी साहित्य का अतीत............................ने लिखा है।

उत्तर : **आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र**

2. 'लोगन कवित्त कीवो खेल करि जानो है' काव्य पंक्ति...........की है।

उत्तर : **ठाकुर**

सत्रीय कार्य :

1. रीतिकाल के नामकरण पर विचार कीजिए।
2. रीतिकाल के वर्गीकरण की विवेचना कीजिए।
3. रीतिबद्ध काव्य के बारे में लिखिए।
4. रीतिमुक्त काव्य के सौंदर्य की विवेचना कीजिए।